शाकनाशी रसायन का नाम	मात्रा (ग्राम सक्रिय पदार्थ/है)	प्रयोग का समय	नियंत्रित खरपतवार
पेन्डीमिथालीन 30 ई.सी. (स्टाम्प)	750–1000 ग्राम	बुवाई के 0–3 दिन तक	घासकुल एवं कुछ चौडी पत्ती वाले खरपतवार सिंचाई

दिन के बाद करनी चाहिए। जिन खेतों में खरपतवार गम्भीर समस्या हों वहॉ खरपतवारनाशक रसायन का छिड़काव करने से खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। खरपतवार नाशक दवाओ के छिडकाव के लिये हमेशा फ्लैट फेन नोजल का ही उपयोग करे।

सिंचाई

पलेवा के अतिरिक्त फसल की आवश्यकता के अनुसार 4–5 सिंचाई करनी चाहिए। बुआई के 20–25 दिन बाद पहली सिंचाई करने पर अधिकतम उपज प्राप्त होती है। इसके बाद 12–15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। जब फसल पूरी तरह फूल खिलने की अवस्था में हो तो सिंचाई नही करें तथा फसल पकने के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देना चाहिये।

फसल सुरक्षा

थ्रिप्स या रसचूसक कीट

नियंत्रण

- बुवाई के पूर्व बीजो को थायोमेथोक्जम 70 डब्ल्यूएस 2 मि.ली./कि.ग्र. बीज के हिसाब से उपचार करें तथा थायोमेथोक्जम 25 डब्ल्यू जी 2 मि.ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिडकाव करनें से थ्रिप्स का अच्छा नियंत्रण होता है।
- ट्राईजोफॉस 40 ई.सी. 2 मि.ली./ली. या इथियोन 50 ई.सी. 2 मि.ली./ली. का छिडकाव आवश्यकतानुसार करना चाहिए।

माहू एवं सफेद मक्खी

डायमिथोएट 1000 मि.ली. प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. प्रति 600 लीटर पानी में 125 मि.ली. दवा के हिसाब से प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना लाभप्रद रहता है।

पीला चितकबरा रोग

रोगरोधी प्रजातियॉ जैसे नरेन्द्र मूंग–1, पन्त मूंग –3, पी.डी.एम.–139 (सम्राट), पी.डी.एम.–11, एम.यू. एम.–2, एम.यू.एम.–337, एस.एम.एल. 832, आई.पी.एम. 02–14, एम.एच. 421 इत्यादि का चुनाव करना चाहिए (ii) श्वेत मक्खी इस रोग का वाहक है। इससे बचाव करने के लिए श्वेत मक्खी के नियंत्रण हेतु ट्रायजोफॉस 40 ई.सी. 2 मि.ली. प्रति लीटर अथवा थायोमेथाक्साम 25 डब्लू. जी. 2 ग्राम/ली. या डायमिथिएट 30 ई.सी. 1 मिली./ली. पानी में घोल बनाकर 2 या 3 बार 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

कटाई एवं मड़ाई

जब 70–80 प्रतिशत फलियां पक जाएं, हॅसिया से कटाई आरम्भ कर देना चाहिए। तत्पश्चात बण्डल बनाकर फसल को खलिहान में ले आते हैं। 3–4 दिन सुखाने के पश्चात सुखाने के उपरान्त डडें से पीट कर या बैलों की दायें चलाकर या थ्रेसर द्वारा भूसा से दाना अलग कर लेते हैं।

उपज

मूंग की खेती उन्नत तरीके से करने पर बर्षाकालीन फसल से 10 क्विंटल/हे. तथा ग्रीष्मकालीन फसल से 12–15 क्विंटल/हे. औसत उपज प्राप्त की जा सकती है। मिश्रित फसल में 3–5 क्विंटल/हे. उपज प्राप्त की जा सकती है।

भण्डारण

भण्ड़ारण करने से पूर्व दानों को अच्छी तरह धूप में सुखाने के उपरान्त ही जब उसमें नमी की मात्रा 8–10% रहे तभी वह भण्डारण के योग्य रहती है।

मूंग का अधिक उत्पादन लेने के लिए आवश्यक बाते

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग करें।
- सही समय पर बुवाई करें, देर से बुवाई करने पर उपज कम हो जाती है।
- किस्मों का चयन क्षेत्रीय अनुकूलता के अनुसार करें।
- बीजोपचार अवश्य करें जिससे पौधो को बीज एवं मृदा जनित बीमारियों से प्रारंभिक अवस्था में प्रभावित होने से बचाया जा सके।
- मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग करे जिससे भूमि की उर्वराशक्ति बनी रहती है जो टिकाऊ उत्पादन के लिए जरूरी है।
- खरीफ मौसम में मेड नाली पद्धति से बुबाई करें।
- समय पर खरपतवारों नियंत्रण एवं पौध संरक्षण करें जिससे रोग एवं बीमारियो का समय पर नियंत्रण किया जा सके।
- खरीफ में बुवाई के लिये रिज–फरो विधि अपनाये।
- पीला मोजेक रोग रोधी किस्में: नरेन्द्र मूंग–1, पंत मूंग–1, पंत मूंग–3, पी.डी.एम.–139 (सम्राट), पी.डी.एम.–11, एम.यू.एम.–2, एम.एल.–337, आई.पी.एम.02–14, एम.एच.–421, एस.एम.एल. –832 इत्यादि का चुनाव क्षेत्र की अनुकूलता के अनुसार करे।
- पौध संरक्षण के लिये एकीकृत पौध संरक्षण के उपायों को अपनाना चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण अवश्य करे।
- तकनीकी जानकारी हेतु अपने जिले / नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क करें।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा फसल उत्पादन (जुताई, खाद, बीज, सूक्ष्म पोषक तत्व, कीटनाशी, सिंचाई के साधनो), कृषि यन्त्रों, भण्डारण इत्यादि हेतु दी जाने वाली सुविधाओं/अनुदान सहायता/ लाभ की जानकारी हेतु संबधित राज्य /जिला/ विकास खण्ड स्थित कृषि विभाग से संपर्क करें।

अधिक जानकारी हेतु देखें–
एम–किसान पोर्टल– http://mkisan.gov.in/
फार्मर पोर्टल– http://farmer.gov.in/
किसान कॉल सेन्टर– टोल–फ्री नं – 1800–180–1551

लेखन एवं संपादन
डॉ ए. के. तिवारी
डॉ ए. के. शिवहरे
श्री विपिन कुमार

तकनीकी सहयोग
डॉ. संदीप सिलावट
श्री सतीश द्विवेदी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

निदेशक
भारत सरकार
दलहन विकास निदेशालय
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एव किसान कल्याण विभाग
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन, भोपाल–462004 (म.प्र.)
ई–मेल – dpd.mp@nic.in
फेक्स – 0755-2571678,
दूरभाष – 0755-2550353/ 2572313
वेबसाइट – www.dpd.gov.in

IFFCO 50 1967 2017
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व Wholly owned by Cooperatives
स्वर्ण जयंती Golden Jubilee

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011
दूरभाष: 0755- 2555883, 4036202, 4036217
वेबसाइट : http://www.iffco.in, Email: smm_bhopal@iffco.in

मुद्रक : कृषक जगत प्रींटिंग वर्क्स, भोपाल, दूरभाष : 9826255861

मूंग

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग
दलहन विकास निदेशालय
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन भोपाल - 462004 (म.प्र.)

सौजन्य से :

IFFCO 50 1967 2017
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व Wholly owned by Cooperatives
स्वर्ण जयंती Golden Jubilee

किसानों, कृषि एवं सहकारिता को समर्पित
गौरवमयी स्वर्ण जयंती वर्ष में

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011

SOIL HEALTH CARD
स्वस्थ धरा, खेत हरा

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Per Drop, More Crop

मूँग

उत्तर भारत के सिंचित क्षेत्र में अल्पावधि वाली दलहनी फसल मूँग को ग्रीष्मकाल में उगाकर कृषकों की वार्षिक आय में अप्रत्याशित वृद्धि संभव है। मूँग के दाने में 24–25% प्रोटीन 56% कार्बोहाइड्रेट व 1.3% वसा पायी जाती है। ग्रीष्म मूँग की खेती चना, मटर, गेंहूँ, सरसों, आलू, जौ, अलसी आदि फसलों की कटाई के बाद खाली हुए खेतों में की जा सकती है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, म.प्र प्रमुख ग्रीष्म मूँग उत्पादक राज्य हैं। धान–गेंहूँ फसल चक्र वाले क्षेत्रों में जायद मूँग की खेती द्वारा मृदा उर्वरता को उच्च स्तर पर बनाये रखा जा सकता है।

फसल स्तर

बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012–2015) में भारत में मूंग का कुल क्षेत्र 30.41 लाख हे. व उत्पादन 14.25 लाख टन था। राजस्थान में अधिकतम क्षेत्र व उत्पादन था जोकि कुल क्षेत्र व उत्पादन का क्रमशः 29.68% व 25.51% था। महाराष्ट्र का स्थान क्षेत्रफल में द्वितीय (12.98%) उत्पादन में तृतीय (11.92%) था। आंध्रप्रदेश क्षेत्रफल के हिसाब से तृतीय स्थान (8.74%) व उत्पादन में द्वितीय स्थान (12.43%) था। उत्पादकता के हिसाब से पंजाब प्रथम स्थान (838 कि.ग्रा./हे.) पर था। इसके बाद झारखण्ड (680 कि.ग्रा./हे.) और तमिलनाडू (675 कि.ग्रा./हे.) आते है। भारत में औसत उत्पादकता 468 कि.ग्रा./हे. थी। सबसे कम उत्पादकता कर्नाटक (247 कि.ग्रा./हे.) में तथा इसके बाद छत्तीसगढ़ (269 कि.ग्रा./हे.) व उडीसा में (337 कि.ग्रा./हे.) देखी गई। (DES, 2015-16).

मृदा

दोमट मृदा सबसे अधिक उपयुक्त होती है। इसकी खेती मटियार और बलुई दोमट मे भी की जा सकती है जिनका पी. एच. 7.0 से 7.5 हो, इसके लिए उत्तम हैं। खेत में जल निकास उत्तम होना चाहिये।

बुआई समय

खरीफ मूँग की बुआई का उपयुक्त समय जून के द्वितीय पखवाड़े से जुलाई के प्रथम पखवाड़े के मध्य है। बसंत कालीन मूँग को मार्च के प्रथम पखवाड़े में एवं ग्रीष्मकालीन मूँग को 15 मार्च से 15 अप्रैल तक बोनी कर देना चाहिये। बोनी में विलम्ब होने पर फूल आते समय तापक्रम वृद्धि के कारण फलियाँ कम बनती हैं अथवा बनती ही नहीं है इससे इसकी उपज प्रभावित होती है।

खेत की तैयारी

खरीफ की फसल हेतु एक गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करना चाहिए एंव वर्षा प्रारंभ होते ही 2–3 बार देशी हल या कल्टीवेटर से जुताई कर खरपतवार रहित करने के उपरान्त खेत में पाटा चलाकर समतल करें। दीमक से बचाव के लिये क्लोरोपायरीफॉस 1.5 % चूर्ण 20–25 कि.ग्रा/हे. की दर से खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिलाना चाहिये। ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिये रबी फसलों के कटने के तुरन्त बाद खेत की तुरन्त जुताई कर 4–5 दिन छोडॉ कर पलेवा करना चाहिए। पलेवा के बाद 2–3 जुताइयाँ देशी हल या कल्टीवेटर से कर पाटा लगाकर खेत को समतल एवं भुरभुरा बनावे। इससे उसमें नमी संरक्षित हो जाती है व बीजों से अच्छा अंकुरण मिलता हैं।

बीजशोधन

मृदा एवं बीज जनित रोगों से बीजों के बचाव के लिए थायरम 2 ग्राम + कार्बेन्डाजिम 1 ग्रम अथवा कार्बेन्डाजिम् केप्टान (1:2) 3 ग्राम दवा या कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित कर लें। इसके बाद बीज को इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्लू. एस. से 7 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचारित करे।

बीजोपचार

बीज शोधन के 2–3 दिन बाद बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए। 50 ग्राम गुड़ या शक्कर को आधा लीटर जल में घोलकर उबालें व ठण्डा कर लें। ठण्डा होने पर इस घोल में राइजोबियम कल्चर डालकर 10 कि.ग्रा. बीज को उपचारित करे। उपचारित बीजों को 4–5 घंटे तक छाया में फेला देते हैं। उपचारित बीज को धूप में नहीं सुखाना चाहिए। बीज उपचार दोपहर में करें ताकि शाम को अथवा दूसरे दिन बुआई की जा सके। बीजोपचार कवकनाशी–कीटनाशी एवं राइजोबियम कल्चर को क्रम में ही करना चाहिए।

बीज दर

खरीफ में कतार विधि से बुआई हेतु मूंग 12–15 कि.ग्रा./है. पर्याप्त होता है। बसंत अथवा ग्रीष्मकालीन बुआई हेतु 20–25 कि.ग्रा/है. बीज की आवश्यकता पड़ती है। गन्ने के साथ सहफसली खेती के लिए मूँग की बीज दर 7–8 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखनी चाहिए। मिश्रित फसल में मूँग की बीज दर 8–10 कि.ग्रा./है. रखते है।

बुवाई विधि

सीड ड्रिल या देशी हल के पीछे नाई या चोंगा बॉधकर केवल पंक्तियों में ही बुवाई करना चाहिए। खरीफ फसल के लिए कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. तथा बसंत (ग्रीष्म) के लिये 30 से.मी. रखी जाती है। पौधे से पौधे की दूरी 10 से.मी. रखते हुये 4 से.मी. की गहराई पर बोना चाहिये।

अन्तरवर्तीय खेती

बसंतकालीन गन्ने के साथ अन्तरवर्तीय खेती करना अत्यन्त लाभदायक रहता है। बसंतकालीन गन्ने को 90 से.मी. दूरी पर पंक्तियों में बोते है। गन्ने की दो पंक्तियों के बीच की दूरी में मूँग (टाइप 1 या पूसा बैसाखी) की दो पंक्ति 30 से.मी. की दूरी पर बोते है। मूँग की पँक्ति गन्ने की पँक्ति से 30 से.मी. की दूरी पर रखते है। ऐसा करने पर मूँग के लिए अतिरिक्त उर्वरक की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सूरजमुखी व मूँग को 2:6 पंक्ति के अनुपात में भी बो सकते हैं।

प्रजातियां

राज्यवार प्रमुख प्रजातियों का विवरण

क्र.	राज्य	प्रजातियाँ खरीफ	रबी	ग्रीष्म
1.	आंन्ध्रप्रदेश	मधिरा–429,पूसा–9072, डब्लू.जी.जी.–2, आई.पी.एम 02–14, ओ.यू.एम.11–5, को.जी.जी. 912	एल.जी.जी.–460, एल.जी.जी.–450, एल.जी.जी.–407, टी.एम. 96–2	–
2.	आसाम	आई.पी.एम. 2–3, पंत मूँग 4, नरेन्द्र मूंग –1, ए.जी.–1, पंत मूंग–2	–	हम–16,पी.डी.एम.139, मेहा, पंत मूंग –5, हम–12, पूसा विशाल, टी.बी.एम.–37
3.	बिहार एवं झारखंड	आई.पी.एम. 2–3, एम.एच. 2–15, पंत मूंग –4 ,– हम–1, पंत मूंग–2, नरेन्द्र मूंग –1, सुनैना, पी.डी.एम.–139, एम.एच.–2–15	हम–16,पी.डी.एम. 139, मेहा,	पंत मूंग –5, हम–12, पूसा विशाल, टी.बी.एम.–37
4.	गुजरातगुजरात	मूँग–3, गुजरात मूँग–4, के–851, पी.के.वी.ए.के.एम–4	–	–
5.	हरियाणा	आई.पी.एम. 2–3, एम.एच. 2–15, मुस्कान	–	एस.एम.एल. 668, पंत मूँग–5
6.	हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर	पूसा 672, के.एम. 2241, शालीमार मूँग– 1	–	–
7.	कर्नाटक	आई.पी.एम. 02–14 एवं 2–3, हम–1, पी.के.वी.ए.के.एम–4,को.जी.जी. 912, के.के.एम. 3, एल.जी.जी. 460,टार्म 1, ओ.बी.जी.जी. 52	–	–
8.	मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ	हम–1,टी.जे.एम.–721, बी.एम.–4, मेहा	–	पी.डी.एम.139, मेहा, हम–1
9.	महाराष्ट्र	हम–1, बी.एम. .2002–1, पी.के.वी.ए.के.एम–4, बी.एम. 4, टार्म–2	–	–
10.	ओडीशा	पी.डी.एम.139, ओ.यू.एम.11–5, को.जी.जी. 912, आई.पी.एम. 2–3	पी.डी.एम.139, एल.जी.जी. 460,टार्म 1,– ओ.बी.जी.जी. 52, आई.पी.एम. 2–3	
11.	पंजाब	आई.पी.एम.2–3, एम.एच. 2–15, एम.एल. 818, एम.एल. 613–	–	एस.एम.एल. 668 आई.पी.एम. 2–3, पंत मूँग–5
12.	राजस्थान	एस.एम.एल. 668, आई.पी.एम. 2–3, आर.एम.जी. 492, एम.एच. 2–15	–	एस.एम.एल. 668, पी.डी.एम. 139, मेहा
13.	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड	पंत मूँग 5, पंत मूँग 4, नरेन्द्र मूंग –1	–	हम 16, आई.पी.एम. 2–3, पी.डी.एम.139, मेहा, हम 12
14.	तमिलनाडू	आई.पी.एम.2–3, को 6, टी.एम. 96–2, वंबन 2, वंबन 3	–	ए.डी.टी.–3,सुजाता (हायब्रिड 12–4)
15.	पश्चिम बंगाल	एम.एच. 2–15, पंत मूँग 5, पंत मूँग 4, नरेन्द्र मूंग –1,	–	हम 16, आई.पी.एम. 2–3, पी.डी.एम.139, मेहा, टी.बी.एम.–37, पंत मूँग 5 एवं पूसा विशाल

स्त्रोतः– सीडनेट, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय , भारत सरकार एवं भा.द.अनु.सं.–भा.कृ.अनु.प.,

उर्वरक

15–20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30–40 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 20 कि.ग्रा. जिंक प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। आलू व चने के बाद उर्वरक की आवश्यकता कम पड़ती है। नाइट्रोजन एवं फास्फोरस की पूर्ति के लिए 100 कि.ग्रा. डी.ए.पी. प्रति है. प्रयोग करना चाहिए। उर्वरकों का प्रयोग फर्टीसीड ड्रिल या हल के पीछे चोंगा बॉधकर कूड़ों में बीज से 2–3 से.मी. नीचे देना चाहिए।

गौण एवं सूक्ष्म पोषक तत्व

गंधक (सल्फर)– काली एवं दोमट मृदाओं में 20 कि.ग्रा. गंधक (154 कि.ग्रा. जिप्सम/फॉस्फो–जिप्सम या 22 कि.ग्रा. बेन्टोनाइट सल्फर) प्रति हैक्टर की दर से बुवाई के समय प्रत्येक फसल के लिये देना पर्याप्त होगा। कमी ज्ञात होने पर लाल बलुई मृदाओं हेतु 40 कि.ग्रा. गंधक (300 कि.ग्रा. जिप्सम/फॉस्फो–जिप्सम या 44 कि.ग्रा. बेन्टोनाइट सल्फर) प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

- **जिंक** -जिंक की मात्रा का निर्धारण मृदा के प्रकार एवं उसकी उपल्बधता पर के अनुसार की जानी चाहिए।
- **लाल बलुई व दोमट मृदा**– 2.5 कि.ग्रा. जिंक (12.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट या 7.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट मोनो हाइड्रेट) प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।
- **काली मृदा**– 1.5 से 2.0 कि.ग्रा. जिंक (7.5 से 10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट) प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।
- **लैटेराइटिक,जलोढ़ एवं मध्यम मृदा**– 2.5 कि.ग्रा. जिंक (12.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट या 7.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट मोनो हाइड्रेट) के साथ 200 कि.ग्रा. गोबर की खाद का प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

प्रमुख प्रजातियों की तुलनात्मक उपज निम्न प्रकार है–

राज्य	प्रजाति उन्नत	स्थानीय किसान उपज	उपज ;कि.ग्रा./हे.द्ध उन्नत	स्थानीय किसान उपज	: वृद्धि
खरीफ	पंजाबपूसा विशाल	एम.एल.–134	1203	1–39	15.8
	एम.एल.–818एस.		991	928	6.8
उड़ीसा	पी.डी.एम.–54	दिगाफन्दी	510	270	88.9
	ओ.पी.जी.जी.–62	दिगाफन्दी	530	270	96.3
पूर्वी उत्तर प्रदेश	नरेन्द्र मूँग–1	स्थानीय	567	296	91.6
	एल.जी.जी.–460	स्थानीय	1125	810	38ण्9
गुजरात	जे.एम.–4	स्थानीय	619	539	14.8
जम्मू कश्मीर	सालीमार– एम.1	स्थानीय	736	609	20.9
	पी.एस.–16		678	525	29.1
कर्नाटक	स्वेल.–4	स्थानीय	754	656	14.9
मध्यप्रदेश	एस.एम.एल.–668	स्थानीय	818	600	36.3
राजस्थान	टार.एम.जी.–492	स्थानीय	733	573	27.9
	आई.पी.एम.–02–3		762	643	18.5
उत्तर प्रदेश	सम्राट	स्थानीय	632	517	22.2
	आई.पी.एम.–02–3		716	554	29.2
	हम–16		1070	886	20.8
महाराष्ट्र	वैभव	स्थानीय	626	551	13.6
	ए.के.एम0–4		712	596	19.5
	पी.के.वी.–ग्रीन गोल्ड		757	614	23.3
	ए.के.एम0–8802		753	610	23.4
छत्तीसगढ़	हम–6	स्थानीय	680	480	41.7
तमिलनाडू	वी.बी.एन.–1	स्थानीय	875	695	25.9
	को.–7		693	553	25.3
	वी.बी.एन.–3		790	704	12.2
	को.जी.जी.–973		864	659	31.1
	को.–6		870	690	26.1
झारखंड	मेहा	स्थानीय	477	389	22.6
	पूसा विशाल		850	638	33.2
कर्नाटक रबी	सेल. 4	स्थानीय	754	656	14.9
आंन्ध्रप्रदेश	एल.जीजी.–460	स्थानीय	1002	886	13.1
तमिलनाडू	वी.बी.एन.–2	स्थानीय	852	698	22.1
	वी.बी.एन.–3	को.–4	754	647	16.5
	एल.जीजी.–460		579	491	17.9
छत्तीसगढ़	हम–6	स्थानीय	680	450	51.1

स्त्रोतः–भा.द.अनु.सं.–भा.कृ.अनु.प., कानपुर, वर्ष 2008–09 से 2012–13 का औसत

- **उच्च कार्बनिक पदार्थ वाली तराई क्षेत्रों की मृदा**– बुवाई के पूर्व 3 कि.ग्रा. जिंक (15 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट या 9 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट मोनो हाइड्रेट) प्रति हेक्टर की दर से तीन वर्ष के अन्तराल पर दें।
- **कम कार्बनिक पदार्थ वाली पहाड़ी बलुई दोमट मृदा**– 2.5 कि.ग्रा. जिंक (12.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट या 7.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट मोनो हाइड्रेट) प्रति हैक्टर की दर से एक वर्ष के अन्तराल में प्रयोग करें ।
- **बोरॉन** - बोरॉन की कमी वाली मृदाओं में उगाई जाने वाली मूँग की फसल में 0.5 कि.ग्रा. बोरॉन (5 कि.ग्रा. बोरेक्स या 3.6 कि.ग्रा. डाइसोडियम टेट्राबोरेट पेन्टाहाइड्रेट) प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।
- **मैंगनीज** - मैंगनीज की कमी वाली बलुई दोमट मृदाओं में 2% मैंगनीज सल्फेट के घोल का बीज उपचार या मैंगनीज सल्फेट के 1% घोल का पर्णीय छिड़काव लाभदायक पाया गया है।
- **मॉलिब्डेनम** - मॉलिब्डेनम की कमी वाली मृदाओं में 0.5 कि.ग्रा. सोडियम मॉलिब्डेट प्रति हैक्टर की दर से आधार उर्वरक के रूप में या 0.1% सोडियम मॉलिब्डेट के घोल का दो बार पर्णीय छिड़काव करना चाहिए अथवा मॉलिब्डेनम के घोल में बीज शोषित करें। ध्यान रहे कि अमोनियम मॉलिब्डेनम का प्रयोग तभी किया जाना चाहिए जब मृदा में मॉलिब्डेनम तत्व की कमी हो।

खरपतवार नियंत्रण

बुआई के 25 से 30 दिन तक खरपतवार फसल को अत्यधिक नुकासान पहुँचाते हैं यदि खेत में खरपतवार अधिक हैं तो बोवाई के 20–25 दिन के बाद निराई कर देना चाहिए। दूसरी निंराई बुआई के 45